Volume 11, Issue II, March 2022, ISSN: 2277-1255
BHARTIYAM INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION & RESEARCH
A quarterly peer reviewed International Journal of Research & Education

बाल-आश्रमों में निवासित बालकों की कोविड-19 के दौर में विलग भावना

***अर्चना यादव **रितेश कुमार**
*****नीतिका**

***संक्षिप्तिका**

भारतीय समाज में परिवार को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। परिवारबालक के उचित विकास,लोकाचार सीखने व स्वस्थ व्यक्तित्व निर्माण में सहयोग करता हैं। इसीलिए प्रायः कहा जाता है कि बालक का पालन-पोषण जिस प्रकार का होगा एवं उसे जैसे संस्कार मिलेंगे, राष्ट्र एवं समाज को बालक से उसी के अनुरूप प्रतिफल मिलेंगे। किन्तु कुछ बालक ऐसे भी हैं,जो निराश्रित हैं व जिनके पास कोई घर या परिवार नहीं है। जनगणना 2011के अनुसार, "6से 14वर्ष के 18.33करोड़ बालकों में से 0.8प्रतिशत से अधिक बालक निराश्रित की श्रेणी में आते हैं"।इतनी अधिक संख्या में मौजूद निराश्रित बालकों की ओर अगर ध्यान नही दिया गया तो देश की प्रगति में बाधा उत्पन्न होगी। यद्यपि भारत में संवैधानिक तौर पर सभी बालकों को समान अधिकार दिए गए हैं तथापि समाज में यह वर्ग ऐसाहै, जो सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक वंचितीकरण से जूझ रहा है।स्वतंत्रता से पूर्व हमारे देश में प्रत्येक वर्ग की शिक्षा की व्यवस्था नहीं थी, किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् समाज के कमजोर वर्ग को शिक्षा, स्वास्थ्य व गरिमा प्रदान करने में देश के कर्णधारों ने सक्रिय भूमिका निभाई है। अनुच्छेद 45 के 6-14 वर्ष तक के सभी बालकों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के प्रावधान के साथ ही शिक्षा के सुधार हेतु गठित सभी आयोगों एवं समितियों ने समाज के हर वर्ग के बालकों की शिक्षा के विकास पर बल दिया हैं। इस शोध पत्र में बाल-आश्रमों में निवासित बालकों के लिए वर्तमान समय में कोविड-19 के दौर में विलग भावनाकीचुनौतियोंएवम् निराश्रित बालकों हेतु शिक्षा के लिए किये गये विभिन्न प्रावधानों का संक्षिप्त विवरण दिया गया हैं। प्रस्तुत शोध पत्र इस आशा के साथ लिखा गया है कि यह निराश्रित बालकों की कोविड-19 के दौर में विलग भावनासम्बन्धी चुनौतियों एवम् बाधाओं से सम्बन्धित परिचर्चा को एक केन्द्रीय प्रसंग बनाते हुए, इस विषय की गंभीरता या महत्ता को समझने में मददगार होगा।

मुख्य शब्द : बाल-आश्रम, कोविड-19, विलग भावना, निराश्रित बालक, समाज, विद्यार्थी।

*अर्चना यादव, सहायक आचार्या, शिक्षापीठ, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़, हरियाणा,
**रितेश कुमार, विद्यार्थी, कानून विभाग, इंदिरा गाँधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी, हरियाणा,
***नीतिका, विद्यार्थी, इंदिरा गाँधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी, हरियाणा

प्रस्तावना :

भारत एक विकासशील एवं लोकतांत्रिक देश है और किसी भी देश का विकास उसकी शिक्षा प्रणाली द्वारा ही अनुप्रमाणित होता है। शिक्षा ही वह दर्पण है जिसमें किसी राष्ट्र की अस्मिता प्रत्यक्ष रूप से प्रतिबिम्बित होती है। शिक्षा न सिर्फ व्यक्ति विशेष के विकास का साधन है, बल्कि यह किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक उत्थान का सबसे शक्तिशाली माध्यम भी है। किसी भी राष्ट्र का विकास तब तक पूर्ण नही हो सकता जब तक उसका प्रत्येक नागरिक शिक्षित न हो जाए। देशके प्रत्येक बालक एवं बालिका को शिक्षा प्रदान करना राज्य का कर्त्तव्य हैं। इस प्रकार भारत में प्रत्येक बालक चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, लिंग का हो अथवा निर्बल, निःशक्त, अनाथ हो उसकी शिक्षा का प्रावधान सरकार व अन्य संगठनों द्वारा किया जा रहा है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि:

भारतीय समाज में परिवार को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। बालक जन्म लेने के बाद से ही स्वयं को विभिन्न परिस्थितियों में घिरा पाता है। यही वातावरणीय परिस्थितियाँ उसके विकास को प्रभावित करती हैं। बालक का प्रथम वातावरण उसका परिवार होता है, जहाँ माता-पिता के स्नेह व दुलार के साथ उसकी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं, साथ ही परिवार के अन्य सदस्यों से बालक के सम्पर्क द्वारा बालक का सामाजीकरण प्रारम्भ होता है, जो जीवन पर्यन्त चलता है। परिवार में बालक के माता-पिता व अन्य सदस्य ऐसा वातावरण निर्मित करते हैं, जिससे बालक का जीवन प्रभावित होता है। माता-पिता न केवल बालक की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं वरन् अपने स्नेह, सुरक्षा, अपनत्व, वात्सल्य से एक स्नेह बंध बनाकर सामाजिक व मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी करते हैं। कुछ बालक ऐसे भी हैं, जो निराश्रित हैं एवम् जिनके पास कोई घर या परिवार नहीं है। समाज में इन निराश्रित बालकों में से बहुत से बाल श्रमिक अथवा बाल-अपराधी बन जाते हैं, किन्तु कुछ भाग्यशाली बालक ऐसे हैं, जिनके पालन-पोषण की जिम्मेदारी किसी बाल-आश्रम द्वारा ले ली जाती है।

शोध पत्र के उद्देश्य :

1. बाल-आश्रम में निवासित बालकों की कोविड 19-के दौर मेंविलग भावनाकिस प्रकार की पाई गई है?
2. बाल-आश्रम में निवासित बालकों में कोविड 19-के दौर में विलग-भाव के क्या कारण रहे है?

बाल-आश्रम में रहने वाले बालक:

*अर्चना यादव, सहायक आचार्या, शिक्षापीठ, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़, हरियाणा,
**रितेश कुमार, विद्यार्थी, कानून विभाग, इंदिरा गाँधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी, हरियाणा,
***नीतिका, विद्यार्थी, इंदिरा गाँधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी, हरियाणा

इस देश में हजारों बालक ऐसे भी हैं, जो अभिभावकों की मृत्यु, अवैध जन्म, अभिभावकों को जेल होने, प्राकृतिक आपदाओं जैसे-भूकम्प, बाढ़ या आतंकवाद का शिकार होने के कारण परिवार से बिछुड़ जाने, गरीबी, बीमारी एवं तलाक के कारण बालक को त्याग देने, बालक का बाजार, मेले, रेलवे स्टेशन जैसे भीड़ भरे स्थानों में माता-पिता से बिछुड जाने, बालक के घर से भागकर आने आदि कारणों से गृहविहीन होकर बाल-आश्रम में निवास कर रहे हैं। विपरीत परिथितियाँ होने के कारण ये बालक समाज की मुख्य धारा से कटे होते हैं। ऐसे बालक माता-पिता का स्नेह प्राप्त नहीं कर पाते तथा स्वयं को विलग, परित्यक्त एवं असहाय महसूस करते हैं। बालक की गृहविहीन स्थितियाँ उसे असुरक्षित, कुण्ठाग्रस्त और विलग-भाव से ग्रसित बना देती हैं।

कोविड-19 के दौर में विलग-भावना :

विलग-भावना से अभिप्राय एकाकीपन अथवा पृथक्करण की भावना से है। बालक में स्थाई सांवेगिक अनुभवों एवं पारिवारिक लगाव की कमी से उत्पन्न हुए अकेलेपन का एहसास। संवेगात्मक रूप से अस्थिर एवं कुसमायोजित रहना भी अकेलेपन को प्रदर्शित करता है।

बालक के पालन-पोषण के तरीके एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि का बालक के व्यवहार से सार्थक संबंध होता है। स्नेह एवं सहानुभूति एक प्रकार की कोमल भावना है, जिसकी नींव परिवार में पड़ती है, किन्तु बाल-आश्रमों में निवासित बालकों में पारिवारिक संबंधों के अभाव के कारण उनमें प्रेम, स्नेह, सहानुभूति आदि मनोभावों का भली-भांति संचार नहीं हो पाता है। ये बालक सामाजिक सम्बन्धों में सामान्यतः निष्क्रिय ही होते हैं। जिससे इनमें अलगाव की उत्पत्ति हो जाती है। इन बालकों में अकेलेपन के कई मनावैज्ञानिक कारण हो सकते हैं, जैसे- पारिवारिक लगाव की कमी होना, वर्तमान परिस्थितियों में सहानुभूति की कमी होना आदि। ये बालक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों ही पक्षों से विलग रह जाते हैं।

बी.विलमैन के अनुसार, "जन्म से प्राप्त सभी आनुवांशिक गुणों को माता-पिता के दुलार में निखरने का अवसर प्राप्त होता है। परिवार के सदस्यों के साथ इसी अनुकरण के माध्यम से बालक सामाजिक संबंध निभाना सीखता है। माता-पिता के आपसी सम्बन्ध बालक के प्रति उनका दृष्टिकोण एवं सामाजिक नियंत्रण बालक के व्यवहार को एक दिशा देते हैं।"

मित्तल, आर. (2020)नेसंस्थाओंमेंपलनेवालेऔरसंस्थाओंमेंनहीपलनेवालेबालकोंकीसमस्याओं एवम् विलग-भावनाकाअध्ययनकिया।इसअध्ययनकेनिम्नपरिणामप्राप्तहुए -

*अर्चना यादव, सहायक आचार्या, शिक्षापीठ, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़, हरियाणा,
**रितेश कुमार, विद्यार्थी, कानून विभाग, इंदिरा गाँधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी, हरियाणा,
***नीतिका, विद्यार्थी, इंदिरा गाँधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी, हरियाणा

संस्थामेंपलनेवालेबालकअधिकसमस्याग्रस्तपाएगए। संस्थामेंरहनेवालेबालक विलग-भाव से ग्रसित, सांवेगिकरुपसेअसंतुलित, गैरजिम्मेदार, उद्देश्यहीन, असुरक्षित, निम्नएवंकुंठितपाएगए।

खान, एम. एस. (2019)मेंजनजातिएवंअनाथबालकोंमेंसमायोजनएवम् एकाकीपन की भावना कातुलनात्मकअध्ययनकरतेहुएनिम्नलिखितनिष्कर्षनिकाले-
अनाथबालकोंकोजनजातिबालकोंकीतुलनामेंसमायोजनमेंज्यादासमस्यातथा एकाकीपन की भावना अधिक रहती है। जनजातिबालकोंकासमायोजनअधिकअच्छा तथा एकाकीपन की भावना बहुत कमपाई गई।

इस प्रकार के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि परिवार के बिना बालक मे कुसमायोजन, एकाकीपन, तनाव एवं उत्साह हीनता उत्पन्न हो जाते हैं। परिवार बालकों के व्यक्तित्व गुणों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है साथ ही उन्हें अपनी एक पहचान बनाने का अवसर भी प्रदान करता है गृहविहीन बालक स्वयं को असुरक्षित एवं उपेक्षित महसूस करते है तथा स्वयं के प्रति नकारात्मक धारणा रखते है।परिवार के बिना बालक प्यार, स्नेह व लगाव से वंचित होता है तथा उसमें नकारात्मकता का विकास होने लगता है। नकारात्मक धारणा बालकों के आत्मविश्वास को कम करती है जिससे बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा भी निर्धारित होती हैं, इससे एक ओर बालक की सफलताएँ प्रभावित होती है, वहीं असफलताओं के कारण उनकी शैक्षिक आकांक्षा तथा महत्वकांक्षा का स्तर भी प्रभावित होने लगता है।

निष्कर्ष :

यूनिसेफ (2011) के आँकड़ों (दस वर्ष के औसत) के अनुसार, सम्पूर्ण विश्व में लगभग 14,30,00,000 बच्चे प्रतिवर्ष बाल-आश्रम पहुँचते हैं। जिसमें से लगभग 2,50,000 बच्चे प्रतिवर्ष बाल-आश्रमों से गोद ले लिये जाते हैं, शेष लगभग 1,40,50,000 बालक एवं बालिकाएँ प्रतिवर्ष बाल-आश्रम की आयु-सीमा पूर्ण करके ही बाल-आश्रम से बाहर निकलते हैं। प्रस्तुत आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि विश्व में बहुत बड़ी संख्या में बालक एवं बालिकाएँ बाल-आश्रमों में निवास करते हैं। इन बाल-आश्रमों में बच्चों को माता-पिता का प्यार एवं सानिध्य प्राप्त नही होने के कारण उनमें अलगाव भावना एवं हीनभावना जैसी मनोवैज्ञानिक समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं। अकेलापन जहाँ बालकों की सफलता व विफलता को निर्देशित करता है वहींकोविड-19 के दौर में विलग भावनासफलता व विफलताएँ उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं को भी प्रभावित करती हैं।शैक्षिक आकांक्षाएँ बालक के भविष्य को निर्धारित करती है। जब बालक विलग-भावना से ग्रिसित हो तो शैक्षिक आकांक्षा अधिक बलवती रहती है। विभिन्न अध्ययनों एवम् स्त्रोतों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा

*अर्चना यादव, सहायक आचार्या, शिक्षापीठ, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़, हरियाणा,
**रितेश कुमार, विद्यार्थी, कानून विभाग, इंदिरा गाँधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी, हरियाणा,
***नीतिका, विद्यार्थी, इंदिरा गाँधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी, हरियाणा

सकता है की बाल-आश्रम में निवासित बालकों की कोविड-19 के दौर में विलग भावनासकारात्मक रूप से अधिक सम्बन्धित है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

- ऐकन, एम. और हाग्रे (2018). *व्यवसायिक अलगावः एक तुलनात्मक विश्लेषण,*नेशनल पब्लिशिंगहाऊस, एडिसन 5, अगस्त 2011, पृष्ठ संख्या 1-2
- कालिया, ए. के. (2012). वैल बिंग ऑफ अडोल सैन्टस् इन रिलेशन टू जैन्डर एण्ड एकडेमिक अचिवमेंट, *जरनल ऑफ एजुकेशनल एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्च,* वॉल्यूम 5, न.1, जनवरी 2012, पृष्ठ संख्या 56-62
- मित्तल, आर. (2020). संस्थाओंमेंपलनेवालेऔरसंस्थाओंमेंनहीपलनेवालेबालकोंकीसमस्याओं एवम् विलग-भावनाकाअध्ययन, *जरनल ऑफ टीचर एसोसिएशन,* वॉल्यूम 7, नं .2, जून 2017, पृष्ठ संख्या 44-51
- खान, वाई.जी.(2009). लेवल ऑफ एजुकेशनल एसपिरेशन टैस्ट, एच. पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा, पृष्ठ संख्या 1
- गुप्ता, एम. (2000) *शिक्षा संस्कार की उपलब्धि,* क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या -1
- गुप्ता, जे. (2016). परिवार में पोषित एवं संस्था में निवासित अनाथ बालकों की दुष्चिन्ता, आत्मप्रत्यय एवं निर्भरता का अध्ययन, *अमेरिकन सोसियोलॉजीकल रिव्यू,* वॉल्यूम 24, नं .5, दिसम्बर 2016, पृष्ठ संख्या 54-61
- चौधरी, वी. (2019). माध्यमिक विधालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन, *इंडियन साईकोलॉजिकल रिव्यू,* वॉल्यूम 75, स्पेशल इसू, 2017, पृष्ठ संख्या 67-74
- छाजेड़, एस. (2018). स्टडी ऑन एजुकेशनल एस्पिरेशन ऑफ इंस्टीटूशनल चिल्डरन् ऑफ इंदौर, *इंटरनेशनल जरनल ऑफ साइकॉलोजी,* वॉल्यूम 7, नं .1, मार्च 2016, पृष्ठ संख्या 14-21
- नागर, डी. आर. (2017). हरियाणा के निराश्रित गृहों में निवासित एवं सामान्य बालकों की विलग-भावना का उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन, *इंडियन साइकोलॉजिकल रिव्यू,*वॉल्यूम 60, नं .1, जुलाई 2017, पृष्ठ संख्या 14-21

*अर्चना यादव, सहायक आचार्या, शिक्षापीठ, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़, हरियाणा,
**रितेश कुमार, विद्यार्थी, कानून विभाग, इंदिरा गाँधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी, हरियाणा,
***नीतिका, विद्यार्थी, इंदिरा गाँधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी, हरियाणा

- पारिक, उदय (2017). दिल्ली के बाल सुधार गृहों में रहने वाले अपराधी बालकों के आत्मप्रत्यय का अध्ययन, *प्राची जरनल ऑफ साइको-कलचर डायमेनसनस*,वॉल्यूम-21, नं .2, अक्टूबर 2017, पृष्ठ संख्या 67-72
- पियरसन, डी .एम. (2018). *ईगो एण्ड डिसक्रेपैन्सी बिटविनकोनसियस एण्ड मोटर स्किल*, न्यू देहली पब्लिकेशन हाऊस, एडिसन 6, पृष्ठ संख्या 691-692
- मंगल, एस. के. (2008*) विद्यार्थी, अधिगम एवं संज्ञान*, टंडन पब्लिकेशनस्, बुक मार्केट, लुधियाना, पृष्ठ संख्या 170
- मेमन, एम. एल. (1957) *शिक्षा एवं समाज*, गार्गी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 42
- शर्मा, आर. आर. (2015). अलगाव मापनी, *नेशनल साइकोलॉजिकल कोर्पोरेशन*, आगरा, पृष्ठ संख्या 1-2
- शर्मा, वी. पी. और गुप्ता, ए. (2015). शैक्षिक आकांक्षा मापनी, *नेशनल साइकोलॉजिकल कोर्पोरेशन*, आगरा, पृष्ठ संख्या 1-2
- सिंह, ए. के. (2016). *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान*, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 693 और 722
- सिंह, एस. (2016). माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन, *जरनल ऑफ एजुकेशनल एण्ड साईकोलॉजिकल रिसर्च*, वॉल्यूम 51, नं-.2, अक्टूबर 2016, पृष्ठ संख्या 42-47
- स्पिट्ज, एन. (2017). ए स्टडी ऑन चिल्डरन् लिविंग इन नर्सरी एण्ड फोन्डलिंग होम इन रिलेशन टू देयर अलीनेशन, *जनरल ऑफ कोम्यूनिटी गाइडैन्स एन्ड रिसर्च*, वॉल्यूम 33, नं .1, मार्च 2017, पृष्ठ संख्या 47-53
- हंस व अन्य (2018) माता-पिताकेदृष्टिकोण, सुरक्षाकीभावनावपरिवारकीसामाजिकआर्थिकस्थितिकाशैक्षिक आकांक्षा परप्रभावसंबंधीअध्ययन, *जरनल ऑफ सोशल रिलेशनस्*, वॉल्यूम 22 (फर्स्ट क्वार्टर), नं .4, मई 2017, पृष्ठ संख्या 42-48
- हरोल्ड, ई .मितरेल (1982). इनसाइकलॉपिड़िया इन एजुकेशनल रिसर्च, 5वॉ एडिशन, वॉल्यूम 3
- हिल्ड़ा लेविस (2016). *बैकग्राउन्ड ऑफ हैल्पलैस चाइल्ड* (फस्ट एडिसन), न्यूयॉर्क: डेल पब्लिशिंग कोर्पोरेशन, मार्च 2016, पृष्ठ संख्या 57

*अर्चना यादव, सहायक आचार्या, शिक्षापीठ, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़, हरियाणा,
**रितेश कुमार, विद्यार्थी, कानून विभाग, इंदिरा गाँधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी, हरियाणा,
***नीतिका, विद्यार्थी, इंदिरा गाँधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी, हरियाणा